B.A.(Hons.) Part-III

Geography – Paper-VII

जनसंख्या भूगोल

(Population Geography)

क्र०सं०	पाठ	पाठ सं०	पृष्ठ सं०
इकाई-1			
1.	जनसंख्या भूगोल का अर्थ एवं अध्ययन क्षेत्र	1	03-13
2.	जनसंख्या जनांकिकी विज्ञान के रूप में	2	14-23
3.	जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान प्रवृत्ति : विकसित विकासशील देशों के संदर्भ में	3	24-37
4.	जनसंख्या आँकड़ों के स्रोत	4	38-47
5.	जनसंख्या पूर्वानुमान की विधियाँ	5	48-57
इकाई-2			
6.	प्रजननता : माप एवं निर्धारक	1	58-73
7.	मर्त्यता : मापन एवं निर्धारण	2	74-87
8.	राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रवास	3	88-100
9.	माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त	4	101-112
10.	जनांकिकीय संक्रमण सिद्धान्त तथा अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त	5	113-127
इकाई-4			
11.	भारत में जनसंख्या संयोजन/संघटन	1	125-141
12.	भारत में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना	2	142-154
13.	भारत में साक्षरता	3	155-166
14.	भारतीय जनसंख्या की आयु एवं लिंगानुपात संरचना	4	167-180
15.	भारत के प्रमुख धर्म	5	181-191
16.	भारत की मुख्य भाषाएँ	6	192-200
इकाई-5			
17.	भारत में जनसंख्या की वृद्धि	1	201-212
18.	भारत में जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व	2	213-228
19.	भारत में नगरीकरण	3	229-245
20.	भारत में नगरीकरण की समस्याएँ	4	246-260
21.	भारत की जनसंख्या नीति	5	261-287

इकाई-1 पाठ - 1

जनसंख्या भूगोल का अर्थ एवं अध्ययन क्षेत्र
(Meaning and Scope of Population Geography)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

1.0 उद्देश्य (Objective)

1.1 परिचय (Introduction)

1.2 जनसंख्या एवं जनसंख्या भूगोल (Population and Population Geogeaphy)

1.3 जनसंख्या भूगोल का अर्थ (Meaning of Population Geography)

1.4 जनसंख्या भूगोल का अध्ययन क्षेत्र (Scope of Population Geography)

1.5 जनसंख्या भूगोल का उपाशम (Approaches to Population Geography)

1.6 सारांश (Summing up)

1.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1.0 उद्देश्य (Objective)

भौगोलिक अध्ययन में बढ़ते विशिष्टीकरण के कारण भूगोल की शाखाओं में वृद्धि होती जा रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में इस अध्ययन का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को जनसंख्या भूगोल की शाखा से परिचित कराना है। जिसके अंतर्गत उन्हें जनसंख्या भूगोल का अर्थ एवं अध्ययन क्षेत्र तथा कई अन्य संबंधित बातों का समावेश कर ज्ञान को समाजोपयोगी बनाने का प्रयास किया जाना है।

1.1 परिचय (Introduction)

प्राचीन भूगोल तथा नवीन आधुनिक वैज्ञानिक भूगोल के आरंभिक वर्षो में भूगोल के अंतर्गत भौतिक पक्ष पर ही विशेष बल दिया जाता रहा। इनमें ग्रीक, रोम, अरब तथा जर्मन भूगोलवेत्ताओं के कार्य महत्वपूर्ण

हैं। धीरे-धीरे जब भूगोल को सामाजिक विज्ञान के निकट लाने का प्रयास हुआ और प्रथम विश्व युद्ध के बाद जब विकास की बात आयी तब फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं ने भौतिक पक्ष की बजाय मानवीय पक्ष पर अधिक जोर देना आरंभ कर दिया। परिणामत: भौगोलिक अध्ययन में मानव को केन्द्रीय स्थान मिलने लगा। जिससे भौतिक बनाम भूगोल का द्वन्द्व या द्वैतवाद भी उभर आया। यही नहीं, मानव की उन्यत तकनीक के उपयोग द्वारा प्रकृति में बदलाव लाने की क्षमता के कारण निश्चयवाद एवं संभववाद का भी द्वैतवाद उठ खड़ा हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि 20वीं शताब्दी के आरंभ में ही भूगोल के दो मुख्य वर्ग बन गए। भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल।

मानव भूगोल के अंतर्गत ही फ्रांसीसी विद्वानों में पॉल-वाइडल-डी-ला-ब्लाश, जीन, ब्रून्स, डिमैंजियम इत्यादि के कार्य उल्लेखनीय माने जाते हैं। मानव भूगोल की वकालत बढ़ने के काण यह एक स्वतंत्र शाखा बन गया। देखते-देखते यह अध्ययन का एक स्थायी क्षेत्र या पक्ष बन गया। इसके तहत मानवीय जनसंख्या एवं इससे जुड़े विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया जाने लगा। हटिंग्टन महोदय के अनुसार मानव भूगोल, "भौगोलिक वातावरण और मानवीय कार्यो और गुणों के संबंधों के स्वरूप और वितरण का अध्ययन है"। इसी तरह अन्य विद्वानों ने भी अपने-अपने ठंग से मानव भूगोल को परिभाषित किया है। मानव भूगोल में भी धीरे-धीरे विशिष्टीकरण होता गया और इसी क्रम में 1953 ई० में अमेरिका के ग्लेन ट्रिवार्था ने भूगोल परिषद के अपने अध्यक्षीय भाषण में "A Case for Population study "विषय पर अपने नए एवं क्रांतिकारी विचारों को रखा। यह जनसंख्या अध्ययन एवं इससे विश्व के अन्य भूगोलवेताओं को जनसंख्या एवं इससे जुड़ी विभिन्न प्रेरित किया। आज विश्व के प्राय: सभी विश्वविद्यालयों में जनसंख्या अध्ययन-अध्ययन एवं शोध की व्यवस्था है। यही नहीं क्षेत्रीय स्तर पर जनसंख्या शिक्षा संबंधी कई संस्थाएँ काम कर रही है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या एवं इससे जुड़ी भौगोलिक पक्षों का अध्ययन काफी महत्वपूर्ण हो जाता है।

1.2 जनसंख्या एवं जनसंख्या भूगोल (Population and Population Geography)

किसी निश्चित समय के दौरान किसी स्थान पर रहनेवाले लोगों या जन की संख्या को जनसंख्या कहा जाता है। ऐसा है कि मानव भूगोल के विकास के पूर्व जनसंख्या नहीं थी। हम सभी जानते हैं कि इस पृथ्वी पर जनसंख्या क्रमश: बढ़ती रही है। आरंभिक वर्षो में जब मानव का ज्ञान कुछ सीमित था, तब वह प्राकृतिक नियमों से बँधा होता था। दूसरे शब्दों में प्रकृति ही उसके लिए सब कुछ थी। मानव का स्थान उस समय गौण था। धीरे-धीरे जब मानव की जरूरतें बढ़ने लगी तब वह प्राकृतिक सीमाओं को तोड़ने की सोचने लगा। इस क्रम में उसने प्रकृति में अपनी आवश्यकतानुसार कई बदलाव किए। जैसे-जैसे उसका ज्ञान बढ़ता गया, वैसे-वैसे वह दूसरे स्थानों की ओर प्रवास भी करने लगा और उन स्थानों के अनुरूप ही जीवन जीने लगा। यही कारण है कि विश्व स्तर पर मानवीय संस्कृति में पर्याप्त अंतर पाया जाता है।

जनसंख्या का संबंध भूत, वर्त्तमान एवं भविष्य तीनों ही कालों से है। इन समयों में जनसंख्या की स्थिति का स्थान के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन ही जनसंख्या भूगोल है। भूगोल वस्तुतः स्थान और समय के संदर्भ में अध्ययन है। इस कारण जनसंख्या की विशेषताओं का समय और स्थान के संदर्भ में अध्ययन एवं विश्लेषण जनसंख्या भूगोल का मुख्य पहलू है।

1.3 जनसंख्या भूगोल का अर्थ (Meaning of Population Geography)

जनसंख्या भूगोल मानव भूगोल से निकली एक प्रमुख शाखा है। जिसके अंतर्गत जनसंख्या संबंधी तत्वों का भौगोलिक अध्ययन किया जाता है। ट्रिवार्था महोदय ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि "जनसंख्या भूगोल का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी की सतह पर जनसंख्या के वितरण में प्रादेशिक अंतरों को समझना है जनसंख्या वह संदर्भ बिन्दु है जहाँ से सभी अन्य तत्वों का अवलोकन एवं विश्लेषण किया जातो है।" ट्रिवार्था द्वारा यह एक सामान्यीकृत परिभाषा दी गई। जिसमें जनसंख्या के गतिशील पक्ष पर प्रमुख बल दिया गया। साथ ही क्षेत्रीय विभिन्नता को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। क्लार्क महोदय के अनुसार "जनसंख्या भूगोल जनसंख्या के वितरण, संघटन, प्रवास, वृद्धि इत्यादि की क्षेत्रीय विभिन्नताओं को स्थान की प्रकृति की विभिन्नताओं से संबंधों की व्याख्या करता है।"

गार्नियर के अनुसार-"जनसंख्या भूगोल वर्तमान वातावरण के संदर्भ में जनांकिकी संबंधी तथ्यों का वर्णन करता है साथ ही उनके कारणों, मूलभूत विशेषताओं तथा संभाव्य परिणामों की व्याख्या भी करता है।" जबकि डैम्को का यह मानना है कि- "जनसंख्या भूगोल में किसी क्षेत्र की जनांकिकीय लक्षणों वितरण का विश्लेषण किया जाता है।"

जनसंख्या भूगोल को परिभाषित करते हुए जेलिंस्की ने अपनी पुस्तक A Prologue to Population Geography में यह लिखा कि " population grography can be defined accurately as the science that deals with the ways in which the geographic character of places is formed by and in turn reacts upon a set of population phenomenon that vary within it through both space and time as they follow their own behavioural laws interacting with one another and with numerous non-demographic phenommenon.

जनसंख्या भूगोल की यह परिभाषा काफी विस्तृत, लंबी एवं कठिन है, जिसे समझना भी काफी कठिन कार्य है। इस परिभाषा में जनसंख्या तथा भूगोल के विभिन्न पक्षों का समावेश किया गया है। दोनों के बीच के संबंधों की व्याख्या इसमें शामिल हैं।

1980 ई० में चांदनी एवं सिद्व ने अपनी पुस्तक "An Introduction to Population Geography" में यह लिखा है कि जनसंख्या भूगोल का संबंध तीन मूलभूत बातों से है:-

(क) जनसंख्या संबंधी लक्षणों का क्षेत्रीय एवं सामाजिक वर्णन।

(ख) जनसंख्या की विभिन्न क्षेत्रीय एवं सामाजिक परिस्थितियों की व्याख्या।

(ग) जनसंख्या संबंधी विभिन्न सामाजिक एवं क्षेत्रीय परिस्थितियों को निर्मित करनेवाली प्रक्रियाओं की पहचान तथा उनका तर्कसंगत विश्लेषण करना।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से जनसंख्या भूगोल का अर्थ यह निकलता है कि यह जनसंख्या संबंधी तत्वों या उनके गुणों का सामाजिक एवं स्थानिक विश्लेषण है। दूसरे शब्दों में जनसंख्या भूगोल जनसंख्या संबंधी तत्वों का समय और स्थान के संदर्भ में वितरण का विश्लेषण करता है।

1.4 जनसंख्या भूगोल का अध्ययन क्षेत्र (Scope of Population Geography)

वर्तमान विश्व की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। इसके कारण भूगोल के साथ ही साथ समाज विज्ञान के अन्य विषयों में भी जनसंख्या संबंधी पक्षों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया जा रहा है। जनसंख्या संबंधी पक्षों का अध्ययन समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र एवं भूगोल में भी किया जाता है। चूँकि प्रत्येक विषय के अध्ययन की अपनी सीमाएँ है, इसलिए जनसंख्या संबंधी विशेषताओं के अध्ययन का क्षेत्र एवं उसका उपागम अथवा प्रणाली अलग-अलग है। समाज विज्ञान क एक प्रमुख विषय होने के कारण भूगोल में भी और विशेषकर मानव भूगोल के तहत जनसंख्या पक्ष का अध्ययन किया जाता है। परन्तु विशिष्टीकरण के कारण जनसंख्या भूगोल आज एक स्वतंत्र विषय है, जिसके अंतर्गत अध्ययन के कई क्षेत्रों पर विद्वानों में मतैव्य नहीं है।

क्लार्क महोदय ने अपनी पुस्तक Population Geography में जनसंख्या भूगोल के अध्ययन क्षेत्र को तीन भागों में बाँटने का प्रयास किया है-

1. निरपेक्ष विशेषताओं का अध्ययन इसके अंतर्गत जनसंख्या की निरपेक्ष संख्या, अर्थात् वितरण, वृद्धि एवं घनत्व जैसे पक्षों का अध्ययन किया जाता है।
2. भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विशेषताओं का अध्ययन इसके अंतर्गत जनसंख्या की आयु, लिंग, साक्षरता, शिक्षा, भाषा, धर्म, वैवाहिक स्थिति, परिवार एवं जातीय समूह तथा व्यावसायिक संरचना, श्रमिक वर्ग एवं आय स्तर जैसे पक्षों का अध्ययन किया जाता है।
3. गतिशील विशेषताओं का अध्ययन इसके तहत जनसंख्या की गतिशीलता प्रदान करनेवाले तत्वों तथा जन्म दर, मृत्युदर एवं प्रवास का अध्ययन किया जाता है।

जी० टी० ट्रिवार्था क अनुसार जनसंख्या भूगोल का अध्ययन-क्षेत्र तीन है-

1. जनसंख्या के ऐतिहासिक पक्ष का अध्ययन
2. जनसंख्या की वर्तमान संख्या, वितरण, घनत्व वृद्धि एवं प्रवास पक्ष का अध्ययन
3. जनसंख्या की विशेषताओं का प्रादेशिक अध्ययन। इसके तीन उपक्षेत्र हैं-

(क) जन्म दर, मृत्यु दर आदि से संबंधित लिंगानुपात, आयु संरचना एवं अन्य जनांकिकीय विशेषताओं का अध्ययन,